ॐ

~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय।

कक्षा-अष्टम विषय -हिन्दी

दिनांक-:25/06/2020 **बाट की पहचान**

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

शुभ प्रभात!

आपका दिन मंगलमय हो, आप हमेशा हँसते- मुस्कुराते रहें!

प्रिय छात्रों, जैसा कि आपने अभी तक पढ़ा है, डॉ हरिवंश राय बच्चन की कविता 'बाट की पहचान' में कि वे पथिक को -यात्रियों को किस प्रकार उत्साहित करते हुए अपने पथ पर आगे बढ़ते रहने का सुझाव देते हैं।उनका मानना है कि जीवन- पथ पर हमें अकेले ही बढ़ना होता है।
~~~~~~

इसलिए इस पथ पर चलने से पूर्व ही हम निश्चय कर लें, अपने लक्ष्य का निर्धारण कर लें, तत्पश्चात उस लक्ष्य पर चलें और उस लक्ष्य को प्राप्त करने में, जो हमें कठिनाइयाँ मिले ,उससे हम भागें नहीं बल्कि उसका सामना करते हुए आगे बढ़ें , तब ही हमें सफलता मिलेगी, तब ही हमें अपना लक्ष्य मिलेगा ।

कविता के अन्तिम पद का भावार्थ इस प्रकार है..

बाट की पहचान

---डॉ.हरिवंशराय "बच्चन"

"स्वप्न आता का स्वर्ग का .....

.....

. ...सीख का सम्मान कर ले

.... पहचान कर ले।" प्रसन्नता के कारण हमारी आंखें चमक उठती हैं उस समय कल्पना लोक की उड़ान भरने के लिए हमारे पैरों में पंख लग जाते

प्रसंग –

इस पद में कवि पथिक को संबोधित करते हुए किसी भी मार्ग पर अग्रसर होने से पूर्व उसमें आने वाली कठिनाइयों के प्रति आगाह कर देना चाहते हैं।

व्याख्या-

कवि कह रहे हैं हे पथिक! भावुकता के आवेश में आकर किसी मार्ग पर अग्रसर होने से पूर्व हम स्वर्ग का स्वप्न देखने लगते हैं। प्रसन्नता के कारण हमारे पैरों में पंख लग जाते हैं। छाती उन्मुक्त हो उत्साह से भर जाती है। किंतु राह का एक मामूली सा काँटा पाँवों में चुभ जाता है और खून की दो बूँदों के बहने से ही हमारी सारी कल्पना की दुनिया ही उसमें डूब जाती है। अर्थात् मार्ग में मामूली अवरोध उत्पन्न हो जाने मात्र से ही सारा मजा किरकिरा हो जाता है। अतः पाँवों के काँटे चुभ कर यह शिक्षा देते हैं कि भले ही तुम्हारी आंखों में स्वर्ग के सजीले सपने क्यों न हों किंतु तुम्हें अपने पैरों को पृथ्वी पर सुरक्षित टिकाना चाहिए अर्थात मस्तिष्क में भले ही

कल्पना की ऊँची उड़ान क्यों न हों किंतु व्यावहारिक जगत की उपयोगिता कदापि भूलनी नहीं चाहिए। हमें पथ के चुभे काँटों की इस शिक्षा का सदैव सम्मान करना चाहिए ।किसी मार्ग पर अग्रसर होने से पूर्व उस मार्ग की पूरी जानकारी अवश्य कर लेनी चाहिए ।

काव्यगत सौन्दर्य-

- इस पद में कवि ने एक जीता- जागता जीवन- दर्शन प्रस्तुत किया है
- भाषा ओजपूर्ण एवं प्रभावशाली है।

कठिन शब्दार्थ-:

ललकती= लालायित होती है

उन्मुक्त -:स्वछन्द

दृग कोरकों =आँख के कोने

छात्र कार्य -:

1. कविता का भावार्थ अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें एवं याद करें।

2. कठिन शब्दार्थ अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए एवं याद करें।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी कुसुम